औरत

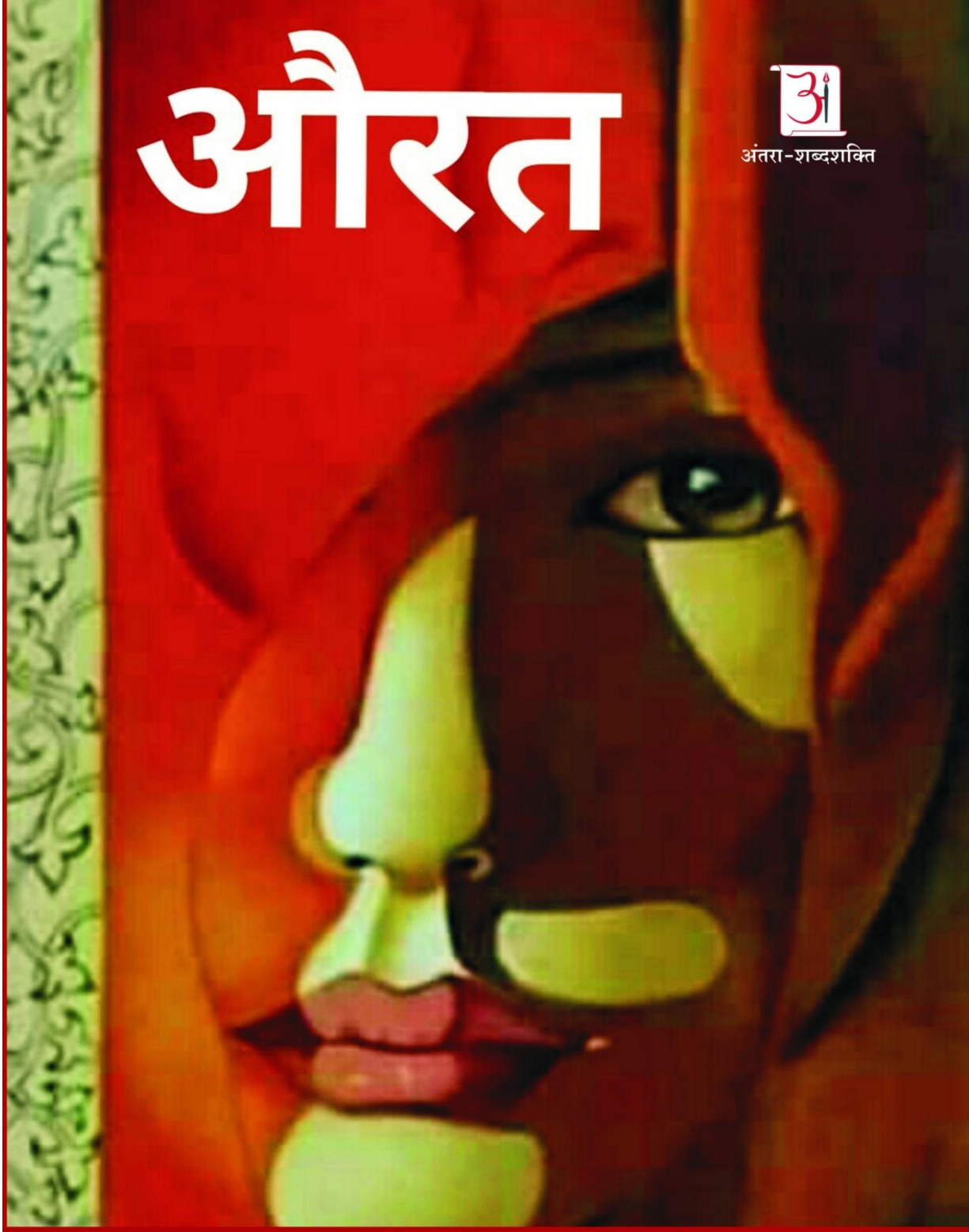

अंतरा-शब्दशक्ति

काव्य संग्रह

डॉ. प्रतिभासिंह परमार राठौड़

औरत

(काव्य संग्रह)

डॉ. प्रतिभा सिंह परमार राठौड़

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-50-6

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ प्रतिभा सिंह परमार राठौड़

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

"Aurat' by "Dr.Pratibha Singh Parmar Rathoud'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

अपनी बात

'अन्तरा शब्द शक्ति' द्वारा मेरी कविताओं पर केन्द्रित एकल संग्रह के प्रकाशन के लिए सर्वप्रथम मैं आभार व्यक्त करती हूं। हालांकि इस बीच प्रदेश की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'शब्द ध्वज' ने भी मेरी रचनाओं पर एकाग्र अंक प्रकाशित किया जो काफी चर्चा में रहा। सुप्रसिद्ध कथाकार सम्माननीय मेहरुन्निसा परवेज़, म. प्र. पुलिस सेवा की वरिष्ठ पुलिस अधिकारी आईपीएस आदरणीय अनुराधा शंकर सिंह की सराहना और सम्बल ने मुझे 'अन्तरा शब्द शक्ति' तक पहुंचने का हौसला दिया।

अब 'अन्तरा शब्द शक्ति' के माध्यम से मैं अपनी प्रतिनिधि कविताओं के साथ देश भर के पाठकों के समक्ष पुनः प्रस्तुत हूं। मूलतः मैं गद्य में लिखती हूं। एक लेखिका और समीक्षक के रूप में मेरी अलग पहचान रही है। वही शाश्वत सत्य भी है। हालांकि श्रीमती शांति देवी महादेव पगारे स्मृति समिति, इटारसी द्वारा भी शीघ्र ही मेरा काव्य संग्रह 'तनया' प्रकाशित किया जा रहा है। ये सब अपने परम पूज्य पिता स्व. ठा. श्री मनोहर सिंह परमार की प्रेरणा और आशीर्वाद से ही सम्भव हो पाया। समय-समय पर मुझे अनेक सम्मान और पुरस्कार भी मिले हैं लेकिन 'अन्तरा शब्द शक्ति' द्वारा मेरी रचनाओं को इस रूप में सम्मान देने के लिए एक बार मैं पुनः 'अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन' का आभार व्यक्त करती हूं।

- डॉ. प्रतिभा सिंह परमार राठौड़
माखननगर (बाबई) म. प्र.

अनुक्रमणिका

1. विराम	5
2. शून्य	6
3. राख	7
4. हुकूमत	8
5. पानी	9
6. बदले तो सिर्फ 'तुम'	10
7. मैं और मेरी 'चुप'	11
8. आईना	12
9. वेदना	13
10.पलाश	14
11.मैं स्वयं ही मेवासा हूँ	15
12.हो सके तो	16

विराम

मुझसे बोले
एक सज्जन
कि
तुम
रुक -रुक कर क्यों बोलते हो?
क्या
हकलाते हो?
मैंने कहा -
तुम भी कहो
रुक-रुक कर,
गर
विरामों को जानते हो....
विरामों को
जानना होता है,
पहचानना होता है,
उसकी तह में उतरना होता है
फिर
निकलना होता है।
विरामों का
'संप्रेषण' नहीं जहाँ
वहाँ
'विचार-सौन्दर्य' का
अनर्थ है,
विरामों को जाने बगैर
भावों की व्याख्या,
'व्यर्थ 'है।

शून्य

शून्य से
शुरू हुई यात्रा
शून्य से
शून्य की ओर।
क्षितिज के
उस पार था शून्य
शून्य का अमरालय
देह की सीमा से बाहर
एक अमाया शून्य
जो शून्य होकर भी
अयाच्य है।
जहाँ से चली आई
एक अनंत यात्रा पर
फिर आ गई
माँ की कोख की
कंदराओं में
एक शून्य टटोलती।
अब भी देखती हूँ
अनंत आकाश का शून्य
मेरी
अनवरत यात्रा
अनंत ऊँचास की ओर
उसी शून्य में
मेरी आस्था
मेरा विश्वास
मेरा मान, सम्मान।
मैं बढ़ रही हूँ
शून्य में
विलीन होने
अपने
अस्तित्व को
अपने
अस्तित्व में समाने
मैं औरत हूँ
शून्य से उपजा
एक शून्य।
औरत हूँ
सृष्टि हूँ मैं
अनंत ब्रह्मांड
समूचा संसार
सारे अस्तित्व को
अपने में समेटे हुए,
मैं सृष्टि हूँ
तो सत्य भी मैं हूँ
शिव भी
और
सुंदरम भी तो मैं ही हूँ,
मैं शून्य हूँ
मैं शिव हूँ
मैं शक्ति हूँ
मैं औरत हूँ।

राख

छुआ था मैंने
आपकी अस्थियों को, राख को
जो
भस्म ही तो थी उस 'देह' की
जिसने जाने कितनी बार
मेरे माथे को हौले से थपथपाया।
पापा!
उन्हीं 'हथेलियों की राख'
जिन्हें कि मेरे पैदा होने पर,
मुझे माँ की गोद से ,
अपनी 'धरा' पर उठाकर,
इस संसार में सबसे ज्यादा खुशी हुई
होगी।
उसी
पुनीत राख में जब ऊँगलियाँ फेरी
तो
मेरी ऊँगली को थामे हुए
आपकी ऊँगली का वो स्पर्श था
जब
पहली बार मेरे 'बालमंदिर' जाते
वक्त
आपने थाम रखी थी,
इस ताक़ीद के साथ
कि
आज के बाद तुम्हें खुद से जाना है।
वो ताक़ीद
आज तक मेरे साथ है 'पापा'!
और अब भी
आपकी आंखों का विश्वास
मेरे आसपास नुमाया है।

माँ जब भी खड़ी होती है दर्पण के
आगे
तो मालूम है मुझे कि उस दर्पण में
एक अक्स पहले उभरता होगा
आपके हाथों से सजी हुई
लाल सुर्ख कुमकुम से
भरी हुई माँग का
और साथ ही आपके अस्तित्व का।
अब जब भी मिलती हूँ
भैय्या, दीदी और छुटकी से
तो
एक दूसरे की आँखों मे
आप ही आप तो होते हैं पापा!
पापा!
सब कितना झूठ कहते हैं
है न?
कि इंसान चला जाता है
बस 'राख' बाकी रह जाती है,
उन अस्थियों में भी आपका लम्स
था,
थी आपकी छुअन जो अब भी है।
जिसे कहते हैं 'होना'
अगर वो था
तो
उससे ज्यादा तो आप अब हो पापा!
फिर
लोग झूठ क्यों कहते हैं पापा!
लोग झूठ क्यों कहते हैं?

हुकूमत

किसी
'अज़ीम-ओ-शान'
शहंशाह की
पनाह में आकर
जैसे
न्यौछावर
हो जाती है 'महकूम'
वैसे ही
मैं भी
मुरीद हूँ
उसकी 'हुकूमत' की ,
'हुकूमत' ही तो है
आखिर
मिरे
'दिल' पर उसकी ।

अर्थ -

1 - अज़ीम-ओ-शान - सबसे बड़ा/महान

2 - पनाह - शरण

3 - महकूम - प्रजा

4 - मुरीद - प्रशंसा करने वाला

5 - हुकूमत - सत्ता

पानी

मनुज!!
तुझसे
एक ही सवाल
क्यों लूट रहे हो
पोखर ताल?
बिन पानी सब सून
कैसे उगेंगे
दाने खेतों में?
बस पांव धसेंगे
रेतों में।
आसां कहाँ है
'पानी' पर
कुछ लिख देना
कोई जज्बात
न कविता।
सच
लिख पाएगी
कलम भी
तभी
जब
कि ह्रदय निर्मल,सोच सयानी हो,
कवि की आंखों में भी पानी हो।

बदले तो सिर्फ 'तुम'

वो ही पतझड़
वो ही सावन
वो ही हम
बदले तो सिर्फ' तुम'।
वो ही गुलनार
वो ही चमन
वो ही बालों के खम
बदले तो सिर्फ 'तुम'।
वो ही रास्ते
वो ही धूल
वो ही पाँवों के निशान
बदले तो सिर्फ 'तुम'।
वो ही आस
वो ही तपन
वो ही आँखों के सपन
बदले तो सिर्फ 'तुम'।

मैं और मेरी 'चुप'

मैं और मेरी 'चुप'
दोनों साथ ही रहती है
कई बार मैंने बोलना चाहा
पर वो है
कि
सीख देने लगती है मुझे
"बेवकूफ औरत !
क्यों
अपने अन्तर्द्वन्द से
उलझती हो
कुछ न हाथ आएगा तुम्हारे
औरत हो
औरत की तरह रहो।
क्यों इस बेरहम दुनिया में
अपने छोटे-छोटे सच को
लड़ती हो?
मैं बेबस सी
उसकी
सीख गुनते रहती हूँ
और
वह विजयी मुस्कान लिये
मेरे अन्तर्मन की
'चीख़' सुनते रहती है
यह अन्त नहीं
लेकिन...
लेकिन ....कब तक?

आईना

किसी की
नजर में
हूँ भला
किसी की
नजर में
गुनहगार सही
चाहे लाख खफ़ा हो
कोई मुझसे
जो मेरे दिल में था
वही जुबां पर है
हजारों
हिजाब में छिपा लो
नुक्स अपने
सामने
मेरे
मगर सब बेपर्दा है
रिश्ते खराब कर लो
चाहे मुझसे
आईना हूँ साहेब!!
किसी के ऐब
छुपाने मुझे नहीं आते।

वेदना

वेदना के
अनुबद्ध
संगीत में
अनायास ही
थिरकते पग उसके
सन्नाटे के साहचर्य में
क्षण-प्रतिक्षण
रीतते दिन उसके
कलौंच लिए
रूढ़ियों के
कोढ़ से बंधन
कस कर
भरसक
कुछ यूँ बाँधे
बस
श्वांसों में सिमट गये
आकांक्षाओं के
'पर' उसके।

पलाश

सुनो पलाश !
कहाँ से लाते हो
ये अंदाज, ये सुर्ख रंग ,
ये टेसुओं का उन्माद ?
मैंने ढूँढा कितना उस स्त्रोत को,
जहाँ से पा गए हो तुम
आत्मा में उतरते ये रंग।
यौवना की चूनर में ढूँढा,
सवालों के पोखर में ढूँढा,
ढूँढा पंडालों में, आश्रमों में,
सितारों में, दरबारों में ढूँढा
कहाँ कहाँ नहीं ढूँढा
.....लेकिन
मिला है अब मुझे तुम्हारा स्त्रोत
अनायास ही
किलकारी मारते बच्चे की आँखों में,
बछड़े को दुलारती
'गौ माता' की जिव्हा में,
मिला है 'बरसाने' में,
'बरसाना' जो झूमता है कान्हा के संग
अतीत की यादों में।
सुनो पलाश!
ये अन्दाज़, ये रंग, ये उन्माद
'प्रेम' से ही तो पाया है न तुमने?
सिर्फ 'प्रेम' से,
बस 'प्रेम' से ?

मैं स्वयं ही मेवासा हूँ

मैं स्वयं ही मेवासा हूँ
मुझमें हैं कई मेवासी
किन्तु
तुम्हारी अनश्वर सत्ता के सम्मुख
क्या बोलूं ?
मस्तिष्क मेरा ज्ञान पिपासु
मन भी कहे कि ...
'मैं' मतिमान
मेरे मंतव्य मनरोचन हैं
स्वाभिमान मैं संकल्पों का
किन्तु
हे नाथ !
तुम्हारी अभिमंत्रित
अभिव्यंजना के सम्मुख
क्या बोलूं ?
तुम पूर्ण मयंक अविचल
तुम जीवन का सत्य सार
तुम बेला-काश अनंत हो
तुम ही तो हो उजस विचार
तुम यमक गमक,
तुम सगण मगण
मतिहारी 'मैं'
बलिहारी 'मैं'
बोलो !
ऐसी दुष्कर
'व्याकरण' के सम्मुख
क्या बोलूं ?
एक रक्त राजपूत मुझमें है
भीतर मेरे हैं कई सेनाएँ
अंतर्मन में जयघोष सदा
अंर्तनिहित जयगाथायें
किन्तु,
विजयी पताका लहराती
तुम्हारी वीर
अनवरत लेखनी के सम्मुख
क्या बोलूं ?
बस मुक्त ह्रदय से
हे सह्रदय श्री !
अंतर्मन की इस चौखट पर
प्रज्जवलित किया
दीपक एक सदा
उनींदी विभावरी के
घोर तम में
जो लेता है बस नाम 'तुम्हारा'
हाँ! बस एक नाम तुम्हारा

अर्थ

मेवासा - गढ़ , किला।

मेवासी - गढ़ में रहने वाले लोग।

हो सके तो

हो सके तो
मेरा
दर्द
पी लेना तुम
हो सके तो
मेरी
बेबसी
जी लेना तुम
हो सके तो
मेरा
माथा
चूम लेना तुम
हो सके तो
मुझे
मांग लेना तुम
किन्तु
जानती हूँ
बात
होने की नहीं
हो सकने की है
गर ऐसा होता
तो सारा संसार
मेरा
और
'सिर्फ़ मेरा' होता।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. प्रतिभा सिंह परमार राठौड़

जन्म - 25 दिसम्बर (भगवानपुरा, खंडवा)

पिता - ठा.श्री मनोहर सिंह परमार

पति - श्री विरेन्द्र सिंह राठौड़

शिक्षा - चिकित्सा शिक्षा के अतिरिक्त स्नातकोत्तर शिक्षा भी।
मनोविज्ञान, ज्योतिष, वास्तु शास्त्र का पृथक अध्ययन ।

पता - जनपद पंचायत के सामने, पिपरिया रोड, माखननगर (बाबई) म.प्र., जिला होशंगाबाद

ई मेल -Prtrat2512@gmail.com

प्रकाशन - प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'शब्द ध्वज' द्वारा कविताओं का विशेषांक प्रकाशन।
देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन।
'तनया' काव्य संग्रह शीघ्र ही प्रकाशनाधिन ।

प्रसारण - आकाशवाणी / टी.व्ही. चैनल आदि में प्रसारण।

सम्मान - संगम कला परिषद बैतूल, अखण्ड राजपूत सेवा समिति, म.प्र. जन चेतना लेखक संघ युवा पत्र लेखक मंच, इटारसी, नर्मदांचल कलमकार संस्थान एवं प्रेस क्लब, वंदे नर्मदा ग्रुप शिव संकल्प साहित्य परिषद होशंगाबाद, लायन्स एवं लायनेस क्लब माखन नगर आदि, साहित्यिक, सांस्कृतिक व सामाजिक संस्थाओ द्वारा पुरस्कार एवं सम्मानित किया गया।

उद्देश्य - परमपूज्य पिता ठा. श्री मनोहर सिंह परमार की असीम प्रेरणा से 1992 से विधिवत् लेखन की शुरुआत। हिन्दी, अंग्रेजी के अलावा उर्दू का भी ज्ञान, मूलत: कविता लेखन, सभी विधाओं में दखल।
- लेखन के माध्यम से समाज को एक सार्थक संदेश देना ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-50-6

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com